Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

Original Article

शैक्षिक दर्शन और वर्तमान शिक्षा प्रणाली: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. अमित कुमार यादव
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, भाभा इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, इंडस्ट्रियल एरिया, गया (बिहार)

Manuscript ID:
JRD -2026-180534
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 5(A)
Pp.141-148
May- 2026
Submitted: 15 Apr. 2026
Revised: 25 Apr. 2026
Accepted: 10 May. 2026
Published: 30 May 2026

सारांश

शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक गहन दार्शनिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के समग्र विकास, सामाजिक उत्थान और राष्ट्रीय प्रगति से जुड़ी हुई है। शैक्षिक दर्शन (Educational Philosophy) इस विचारधारा की नींव है जो शिक्षा के उद्देश्यों, विधियों, पाठ्यक्रम, शिक्षक-छात्र संबंध और मूल्य-स्थापना को दिशा प्रदान करता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली, विशेषतः भारत में, तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य, तकनीकी विकास, आर्थिक आवश्यकताओं और सामाजिक जटिलताओं के अनुरूप ढल रही है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि हम यह समझें कि शैक्षिक दर्शन की भूमिका आज की शिक्षा प्रणाली में कितनी गहरी और व्यापक है। शैक्षिक दर्शन वह विचारधारा है जो यह स्पष्ट करती है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य क्या है – क्या यह केवल रोजगार प्राप्त करने का माध्यम है या यह मनुष्य को नैतिक, सामाजिक और आत्मिक रूप से परिपूर्ण बनाने का माध्यम है? विभिन्न दार्शनिक विचारधाराएं – जैसे आदर्शवाद, यथार्थवाद, व्यावहारिकतावाद, मानवतावाद, निर्माणवाद और समालोचनात्मक विचारधारा – शिक्षा के स्वरूप को प्रभावित करती रही हैं। आदर्शवाद यह मानता है कि शिक्षा का उद्देश्य आत्मा का विकास और सार्वभौमिक सत्य की प्राप्ति है। इसके अनुसार, शिक्षक केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत होता है। वहीं यथार्थवाद भौतिक जगत के सत्य को प्राथमिकता देता है और शिक्षा को वैज्ञानिक ज्ञान, अनुभव और तार्किक सोच से जोड़ता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यथार्थवाद की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है जहाँ विज्ञान, गणित, तकनीकी और तथ्यात्मक ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है।

मुख्यशब्द: *शैक्षिक दर्शन, वर्तमान शिक्षा प्रणाली, दार्शनिक प्रक्रिया, राष्ट्रीय प्रगति, सामाजिक जटिलता, शिक्षा प्रणाली, आधुनिक शिक्षा प्रणाली*

प्रस्तावना

आज की शिक्षा प्रणाली में व्यावहारिकतावाद का प्रभाव भी अत्यंत स्पष्ट है। व्यावहारिकतावाद यह मानता है कि शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को समाज के लिए उपयोगी और उत्पादक बनाना है। यह अनुभव, प्रयोग और समस्या-समाधान आधारित अधिगम (learning) को प्राथमिकता देता है। वर्तमान समय में कौशल-आधारित शिक्षा, रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम, व्यावसायिक प्रशिक्षण, स्टार्टअप-प्रोत्साहन और कार्यानुभव आधारित शिक्षण विधियाँ इस दर्शन के प्रभाव को दर्शाते हैं। इसके साथ-साथ मानवतावाद भी एक महत्वपूर्ण शैक्षिक दृष्टिकोण है, जो शिक्षा को आत्मसम्मान, सहानुभूति, स्वतंत्रता, रचनात्मकता और आत्म-प्रकाशन का माध्यम मानता है। यह शिक्षा को केवल बौद्धिक ही नहीं, बल्कि भावनात्मक और नैतिक स्तर पर भी छात्रों को विकसित करने की प्रक्रिया मानता है। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के माध्यम से एक नई दिशा में आगे बढ़ रही है। यह नीति भारतीय शैक्षिक दर्शन – विशेषतः विवेकानंद, टैगोर, गांधी और श्री अरविंद के विचारों – से प्रेरणा लेती है। यह शिक्षा को केवल सूचना हस्तांतरण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि 'ज्ञान-आधारित समाज' की रचना का साधन मानती है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. अमित कुमार यादव, सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, भाभा इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, इंडस्ट्रियल एरिया, गया (बिहार).

How to cite this article:
यादव, अमित. कुमार. (2026). शैक्षिक दर्शन और वर्तमान शिक्षा प्रणाली: एक समीक्षात्मक अध्ययन. Journal of research & development, 18(5(A)), 141–148. https://doi.org/10.5281/zenodo.20961048

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.20961048
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

नीति में मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा, समग्र विकास, नैतिक शिक्षा, मूल्य-आधारित अधिगम, समावेशी शिक्षा, बहुविषयी दृष्टिकोण, और आजीवन अधिगम पर विशेष बल दिया गया है, जो आदर्शवाद, मानवतावाद और व्यावहारिकतावाद का समन्वयात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जहाँ एक ओर वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बिग डेटा, और ऑटोमेशन जैसे नवीनतम विषय सम्मिलित हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर यह चिंता का विषय भी है कि नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं, और सामाजिक उत्तरदायित्व का ह्रास हो रहा है। यदि शिक्षा केवल प्रतिस्पर्धा, अंक प्राप्ति और कैरियर उन्मुख रह जाए, तो यह मनुष्य को केवल एक यंत्र बना देती है, जो मानवता के विपरीत है। इसलिए शैक्षिक दर्शन यह चेतावनी देता है कि शिक्षा में मूल्य-आधारित दृष्टिकोण, नैतिक प्रशिक्षण, जीवन कौशल, और आत्मानुशासन को प्राथमिकता दी जाए। शैक्षिक दर्शन यह भी स्पष्ट करता है कि शिक्षक का स्थान केवल एक जानकारी देने वाले के रूप में नहीं, बल्कि एक दार्शनिक, मार्गदर्शक और प्रेरणास्त्रोत के रूप में होना चाहिए। वर्तमान समय में शिक्षकों की भूमिका भी बदल रही है – वे अब केवल "ज्ञान स्रोत" नहीं हैं, बल्कि "फैसिलिटेटर", "मेंटॉर" और "लीडर" बन रहे हैं। आधुनिक तकनीकों – जैसे स्मार्ट क्लास, ऑनलाइन लर्निंग, वर्चुअल लैब्स, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित अधिगम – के साथ शिक्षक की भूमिका और अधिक व्यापक और चुनौतीपूर्ण हो गई है। ऐसे में शिक्षक को शैक्षिक दर्शन की गहरी समझ होनी चाहिए ताकि वह विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास में सहायक हो सके।

शैक्षिक दर्शन यह भी स्पष्ट करता है कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत लाभ का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी सशक्त उपकरण है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समावेशिता (inclusiveness), समानता, लैंगिक संवेदनशीलता, और सामाजिक न्याय जैसे पहलुओं को अधिक महत्व दिया जा रहा है। बालिका शिक्षा, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी कक्षाएँ, वंचित वर्गों के लिए छात्रवृत्तियाँ – ये सभी शिक्षा में समतावादी दृष्टिकोण के प्रमाण हैं। यह दृष्टिकोण निर्माणवाद (Constructivism) और मानवतावाद का परिणाम है, जो व्यक्ति को केवल जानकार नहीं, बल्कि चिंतनशील, सहनशील और उत्तरदायी नागरिक बनाना चाहता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को जिस प्रकार की चुनौतियाँ मिल रही हैं – जैसे शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच असमानता, निजीकरण, डिजिटल डिवाइड, शिक्षण की गिरती गुणवत्ता, परीक्षा प्रणाली की त्रुटियाँ, और विद्यार्थियों में बढ़ता मानसिक तनाव – उनका समाधान केवल नीतिगत परिवर्तन से नहीं, बल्कि एक गहरे दार्शनिक आत्ममंथन से ही संभव है। शिक्षा केवल कौशल या ज्ञान प्रदान करने तक सीमित न रहकर, यदि विद्यार्थियों में आत्म-ज्ञान, सामाजिक कर्तव्य, वैश्विक दृष्टिकोण और मानवीय मूल्यों की चेतना जाग्रत कर सके, तभी वह सार्थक कही जा सकती है। शैक्षिक दर्शन हमें यह भी सिखाता है कि हर छात्र भिन्न है – उसकी क्षमताएँ, रुचियाँ, शैली और पृष्ठभूमि अलग है। अतः शिक्षा को 'वन-साइज-फिट्स-ऑल' मॉडल से हटकर व्यक्तिगत और लचीली (flexible) बनाना होगा। NEP 2020 इसी दिशा में पहल करते हुए बहुभाषिकता, पाठ्यक्रम की लचीलापन, और छात्र-केंद्रित शिक्षण विधियों को बढ़ावा दे रही है।

शिक्षा का स्वरूप और दार्शनिक आधार

शिक्षा का स्वरूप और उसका दार्शनिक आधार मानव सभ्यता के विकास, समाज की संरचना और व्यक्तिगत चेतना के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान का हस्तांतरण नहीं, बल्कि यह एक समग्र प्रक्रिया है जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक और आत्मिक विकास को सुनिश्चित करती है। शिक्षा का स्वरूप समय, स्थान, संस्कृति और विचारधारा के अनुसार बदलता रहा है, परंतु उसका मूल उद्देश्य मनुष्य को 'मनुष्य' बनाना, उसकी चेतना को जाग्रत करना, और उसे एक उत्तरदायी, विवेकी तथा नैतिक प्राणी बनाना रहा है। शिक्षा का यह व्यापक और गूढ़ दृष्टिकोण ही शैक्षिक दर्शन का आधार है। शैक्षिक दर्शन वह विचारधारा है जो यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा किसके लिए है, क्यों है, और कैसे दी जानी चाहिए। यह शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विधियों, मूल्यांकन, शिक्षक-छात्र संबंध और शिक्षा के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक प्रभावों की दिशा और दशा निर्धारित करता है। शिक्षा के स्वरूप को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम शिक्षा को केवल औपचारिक विद्यालयी प्रक्रिया से न जोड़ें, बल्कि इसे एक जीवनोपयोगी और सतत प्रक्रिया के रूप में देखें। यह केवल किताबी ज्ञान या प्रमाणपत्र अर्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन जीने की कला, सोचने-समझने की स्वतंत्रता, और अपने अस्तित्व के साथ-साथ समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी विकसित करती है। शिक्षा का यह व्यापक स्वरूप हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि क्या हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली इन उद्देश्यों की पूर्ति कर रही है या केवल रोजगार और प्रतिस्पर्धा तक सीमित रह गई है। यही प्रश्न शैक्षिक दर्शन की उत्पत्ति और उसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है। शैक्षिक दर्शन विभिन्न विचारधाराओं के माध्यम से शिक्षा को दिशा देता है। आदर्शवाद, यथार्थवाद, व्यावहारिकतावाद, मानवतावाद, निर्माणवाद, अस्तित्ववाद और समालोचनात्मक दृष्टिकोण जैसे दर्शन शिक्षा के उद्देश्यों, स्वरूप और प्रक्रियाओं को परिभाषित करते हैं। आदर्शवाद यह मानता है कि शिक्षा आत्मा का विकास है, और इसका उद्देश्य व्यक्ति को नैतिक, आध्यात्मिक और

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

बौद्धिक दृष्टि से परिपूर्ण बनाना है। इसके अनुसार शिक्षक एक गुरु के रूप में होता है जो केवल ज्ञान नहीं देता, बल्कि छात्रों के चरित्र और आत्मा को भी आकार देता है। यह दृष्टिकोण हमें भारतीय प्राचीन गुरुकुल पद्धति की याद दिलाता है जहाँ शिक्षा जीवन के उच्चतम लक्ष्यों की प्राप्ति का माध्यम थी। दूसरी ओर, यथार्थवाद भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को महत्व देता है। यह मानता है कि शिक्षा का उद्देश्य तथ्यात्मक ज्ञान, अनुभव और तर्क के माध्यम से यथार्थ को समझना है। आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विज्ञान, गणित, प्रौद्योगिकी और तार्किक विश्लेषण पर बल इसी दर्शन का परिणाम है। व्यावहारिकतावाद का दृष्टिकोण शिक्षा को सामाजिक समस्याओं के समाधान, कार्यकुशलता, प्रयोग आधारित अधिगम और जीवनोपयोगी कौशलों की प्राप्ति से जोड़ता है। यह शिक्षण को विद्यार्थी केंद्रित बनाता है और सीखने की प्रक्रिया को अनुभव एवं प्रयोग से जोड़ता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रम, कौशल विकास कार्यक्रम और नवाचार आधारित अधिगम इसी व्यावहारिक दृष्टिकोण की देन हैं।

मानवतावाद शिक्षा को व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, आत्म-साक्षात्कार और सामाजिक दायित्व से जोड़ता है। इसके अनुसार शिक्षा का कार्य एक संपूर्ण मनुष्य का निर्माण करना है – ऐसा व्यक्ति जो केवल ज्ञानवान नहीं, बल्कि संवेदनशील, सहानुभूतिपूर्ण और नैतिक दृष्टि से परिपक्व हो। यह दृष्टिकोण आज की शिक्षा प्रणाली में समावेशी शिक्षा, बाल अधिकारों, लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय, और भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे मुद्दों के माध्यम से देखने को मिलता है। निर्माणवाद (Constructivism) यह मानता है कि ज्ञान कोई बाहरी वस्तु नहीं जो शिक्षक से विद्यार्थी को दी जाती है, बल्कि यह एक सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभवों के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करता है। यह दृष्टिकोण आज के समय में अत्यधिक प्रासंगिक है जहाँ परियोजना आधारित शिक्षण, समूह गतिविधियाँ, समस्या समाधान और खोजपरक अधिगम को महत्व दिया जा रहा है। अस्तित्ववाद, एक अन्य महत्वपूर्ण दार्शनिक दृष्टिकोण, शिक्षा को व्यक्ति की स्वतंत्रता, चयन की शक्ति, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व और आत्म-निर्धारण से जोड़ता है। यह मानता है कि शिक्षा का कार्य व्यक्ति को उसकी अस्मिता का बोध कराना और उसे अपने जीवन के उद्देश्य को पहचानने की क्षमता देना है। यह दृष्टिकोण आज के युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य, पहचान-संकट, और जीवन में अर्थ की खोज जैसे विषयों से गहराई से जुड़ा हुआ है। समालोचनात्मक दृष्टिकोण शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और अन्याय के विरुद्ध चेतना जागरण का माध्यम मानता है। यह शिक्षा में शक्ति-संबंधों, सामाजिक असमानताओं, और दमनकारी संरचनाओं की आलोचना करता है और विद्यार्थियों को एक सक्रिय नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है। जब हम शिक्षा के स्वरूप की बात करते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और राष्ट्रीय विकास की रीढ़ है। शिक्षा से ही समाज में लोकतांत्रिक मूल्य, समरसता, सहिष्णुता, समानता और न्याय की भावना विकसित होती है। यही कारण है कि आज की शिक्षा प्रणाली में नागरिक शास्त्र, नैतिक शिक्षा, पर्यावरणीय चेतना, मानवाधिकार, और सतत विकास जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है। ये सभी प्रयास शिक्षा के दार्शनिक आधार को मजबूत करने की दिशा में हैं।

भारत की नई शिक्षा नीति 2020 इसी शैक्षिक दार्शनिक दृष्टिकोण पर आधारित है। यह नीति मातृभाषा में शिक्षा, समावेशी और बहु-विषयी दृष्टिकोण, मूल्य शिक्षा, कौशल विकास, और आजीवन अधिगम पर बल देती है। यह नीति आदर्शवाद, व्यावहारिकतावाद और मानवतावाद का संतुलन प्रस्तुत करती है, जिसमें शिक्षा को केवल सूचना का संप्रेषण नहीं बल्कि 'जीवन निर्माण' की प्रक्रिया माना गया है। इस नीति में यह भी कहा गया है कि शिक्षा केवल 'क्या सीखना है' तक सीमित नहीं हो, बल्कि 'कैसे सीखना है', 'क्यों सीखना है', और 'किसके लिए सीखना है' जैसे मूल प्रश्नों पर आधारित हो।

शिक्षा के प्रमुख दार्शनिक दृष्टिकोण

शिक्षा केवल जानकारी प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के उद्देश्य, उसकी चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिकता और आत्मविकास से जुड़ी एक व्यापक प्रक्रिया है। शिक्षा के इस जटिल स्वरूप को समझने और दिशा देने के लिए विभिन्न शैक्षिक दर्शन विकसित हुए हैं। ये दार्शनिक दृष्टिकोण यह स्पष्ट करते हैं कि शिक्षा का क्या उद्देश्य होना चाहिए, शिक्षक और छात्र की भूमिका क्या होनी चाहिए, ज्ञान की प्रकृति क्या है, और शिक्षा किस सामाजिक संदर्भ में दी जानी चाहिए। शिक्षा के प्रमुख दार्शनिक दृष्टिकोणों में आदर्शवाद, यथार्थवाद, व्यावहारिकतावाद, मानवतावाद, निर्माणवाद, अस्तित्ववाद और समालोचनात्मक दृष्टिकोण प्रमुख हैं। ये सभी दर्शन शिक्षा को विविध आयामों से देखने की सुविधा प्रदान करते हैं।

1. आदर्शवाद (Idealism): आदर्शवाद शिक्षा का एक प्राचीन और प्रभावशाली दार्शनिक दृष्टिकोण है। यह मानता है कि वास्तविकता मानसिक और आत्मिक है, और शिक्षा का उद्देश्य आत्मा का विकास, नैतिकता की स्थापना, और सार्वभौमिक सत्य की प्राप्ति है। आदर्शवाद के अनुसार, भौतिक वस्तुएं अस्थायी हैं, जबकि विचार, सिद्धांत और मूल्य शाश्वत होते हैं। इस दृष्टिकोण में शिक्षक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि प्रेरणास्त्रोत और मार्गदर्शक होता है। यह दर्शन गुरु-शिष्य परंपरा, चरित्र निर्माण, नैतिक

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

शिक्षा और आध्यात्मिक विकास को प्राथमिकता देता है। भारत में शंकराचार्य, विवेकानंद, और पश्चिम में प्लेटो जैसे विचारकों ने आदर्शवाद को शिक्षा के केंद्र में रखा।

2. यथार्थवाद (Realism): यथार्थवाद आदर्शवाद के विपरीत शिक्षा को भौतिक, वस्तुनिष्ठ और तर्कपूर्ण संदर्भ में देखता है। इसके अनुसार, शिक्षा का कार्य वस्तु जगत की सच्चाई को जानना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना है। यह ज्ञान के अनुभवजन्य स्रोतों, निरीक्षण, परीक्षण और प्रयोग पर आधारित होता है। यथार्थवाद का उद्देश्य छात्रों को तथ्यों, नियमों और प्राकृतिक सिद्धांतों को समझाना है ताकि वे अपने चारों ओर की दुनिया को यथार्थ रूप में देख सकें। आधुनिक विज्ञान, गणित, भौतिकी, रसायन जैसे विषयों की पढ़ाई इसी दर्शन की देन है। यह शिक्षण को वस्तुनिष्ठ, तार्किक और उद्देश्यपरक बनाता है।

3. व्यावहारिकतावाद (Pragmatism): व्यावहारिकतावाद शिक्षा को जीवन की समस्याओं से जोड़ता है और इसे प्रयोगात्मक प्रक्रिया मानता है। इस दर्शन के अनुसार, सत्य वह है जो व्यवहार में सफल हो, और शिक्षा का उद्देश्य ऐसी क्षमताओं का विकास करना है जो व्यक्ति को समाज में कुशलता और रचनात्मकता से कार्य करने योग्य बनाए। शिक्षा को अनुभव, प्रयोग और सक्रिय सहभागिता पर आधारित होना चाहिए। जॉन ड्यूई, जो व्यावहारिकतावाद के प्रमुख प्रवक्ता थे, ने शिक्षा को 'जीवन के लिए तैयारी' नहीं, बल्कि 'स्वयं जीवन' कहा। इस दृष्टिकोण के अनुसार कक्षा में समस्या समाधान, समूह कार्य, परियोजना आधारित शिक्षण और बच्चों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम बनाना आवश्यक है।

4. मानवतावाद (Humanism): मानवतावाद शिक्षा को मानवीय गरिमा, आत्म-साक्षात्कार, स्वतंत्रता, रचनात्मकता और नैतिक उत्तरदायित्व से जोड़ता है। यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति में असीम संभावनाएँ होती हैं और शिक्षा का कार्य उन संभावनाओं को विकसित करना है। इस दृष्टिकोण में शिक्षक एक सहायक और प्रेरक होता है, जो छात्र को अपने अनुभवों, अभिव्यक्तियों और रचनात्मक शक्तियों के माध्यम से सीखने के लिए प्रेरित करता है। मानवतावादी शिक्षा आत्मसम्मान, सहानुभूति, आत्म-अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देती है। आज की शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जीवन कौशल, नैतिक शिक्षा और समावेशी शिक्षा जैसे घटक मानवतावादी दृष्टिकोण की देन हैं।

5. निर्माणवाद (Constructivism): निर्माणवाद यह मानता है कि ज्ञान कोई तैयार वस्तु नहीं जो शिक्षक से छात्र को दी जाती है, बल्कि यह छात्र स्वयं अपने अनुभवों, खोज और सक्रिय भागीदारी के माध्यम से बनाता है। यह दृष्टिकोण सीखने को एक सामाजिक प्रक्रिया मानता है जहाँ बच्चे अपने अनुभवों के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। शिक्षक केवल एक सहायक होता है, जो छात्र के सोचने, प्रश्न करने और प्रयोग करने के अवसर देता है। आज के समय में प्रोजेक्ट-आधारित अधिगम, खोजपरक शिक्षण, और सीखने की तकनीकों का निर्माणवादी दृष्टिकोण में विशेष महत्व है। यह छात्रों को रचनात्मक और आलोचनात्मक सोचने के लिए प्रेरित करता है।

6. अस्तित्ववाद (Existentialism): अस्तित्ववाद एक आधुनिक और व्यक्ति-केंद्रित दर्शन है, जो शिक्षा को व्यक्ति की स्वतंत्रता, चुनाव की शक्ति, उत्तरदायित्व और आत्म-अन्वेषण से जोड़ता है। इसके अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय होता है और शिक्षा का उद्देश्य उसे अपने अस्तित्व का बोध कराना है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को अपने जीवन के अर्थ को खोजने, अपने निर्णय स्वयं लेने और उनके लिए उत्तरदायी बनने के लिए प्रेरित करता है। अस्तित्ववादी शिक्षा में पाठ्यक्रम लचीला होता है, और छात्र को अपनी रुचि, आवश्यकता और क्षमता के अनुसार विषय चुनने की स्वतंत्रता होती है। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत पहचान, और आत्म-साक्षात्कार जैसे क्षेत्रों में अत्यंत उपयोगी है।

7. समालोचनात्मक दृष्टिकोण (Critical Pedagogy): समालोचनात्मक शिक्षा दर्शन शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानता है। इसके अनुसार, शिक्षा का कार्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि समाज में मौजूद अन्याय, भेदभाव, और दमनकारी संरचनाओं के विरुद्ध चेतना उत्पन्न करना है। यह शिक्षा को शक्ति-संबंधों, सामाजिक असमानता, लैंगिक भेद, जातीय भेदभाव और पूंजीवादी शोषण के संदर्भ में विश्लेषण करता है। पाउलो फ्रेरे जैसे विचारकों ने शिक्षा को "चुप्पी तोड़ने" और "स्वतंत्रता की प्रक्रिया" बताया। यह दर्शन शिक्षक और छात्र के संबंध को संवादात्मक बनाता है और विद्यार्थियों को सामाजिक रूप से सक्रिय, जागरूक और उत्तरदायी नागरिक बनने की प्रेरणा देता है।

वर्तमान युग में शिक्षा और दार्शनिक चुनौतियाँ

वर्तमान युग तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण, उदारीकरण और सामाजिक-सांस्कृतिक बदलावों का युग है। यह एक ऐसा समय है जहाँ ज्ञान की व्याख्या, हस्तांतरण और उपभोग की परंपरागत अवधारणाएँ तेजी से बदल रही हैं। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है, जो केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक चेतना के निर्माण में भी अहम भूमिका निभा रही है। हालांकि शिक्षा प्रणाली तकनीकी और संरचनात्मक दृष्टि से उन्नत हुई है, फिर भी यह कई गहरी

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

दार्शनिक चुनौतियों से जूझ रही है। आज की शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिकता, नैतिक मूल्यों का क्षरण, समावेशिता की कमी, पहचान संकट, मूल्यविहीनता, और आत्मकेंद्रितता जैसे दार्शनिक संकट स्पष्ट दिखाई देते हैं। इस संदर्भ में यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि हम शिक्षा की दार्शनिक चुनौतियों का विश्लेषण करें और उनके समाधान की दिशा में सोचें।

1. मूल्यविहीनता और नैतिक शिक्षा का अभाव

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा संकट यह है कि वह तेजी से नैतिक मूल्यों से विमुख होती जा रही है। ज्ञान का उद्देश्य केवल सूचना या तथ्यों की प्राप्ति नहीं होता, बल्कि वह व्यक्ति के भीतर सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, सहिष्णुता, उत्तरदायित्व और ईमानदारी जैसे मूल्यों को विकसित करता है। परंतु आज की शिक्षा प्रणाली इन मूल्यों को हाशिए पर डालकर केवल परीक्षा, अंक, और प्रतियोगिता पर केंद्रित हो गई है। छात्रों को यह नहीं सिखाया जा रहा कि वे अपने समाज, परिवार और पर्यावरण के प्रति किस प्रकार जिम्मेदार बनें। शिक्षा में नैतिकता और मूल्यों की पुनर्स्थापना एक महत्वपूर्ण दार्शनिक चुनौती बन चुकी है।

2. शिक्षा का व्यावसायीकरण और बाजारीकरण

आधुनिक युग में शिक्षा एक सेवा न रहकर एक 'उद्योग' बन चुकी है। निजी स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों का प्राथमिक उद्देश्य लाभ कमाना हो गया है, न कि विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित करना। इस प्रवृत्ति ने शिक्षा को एक उत्पाद और छात्र को उपभोक्ता बना दिया है। यह स्थिति शिक्षा की आत्मा के विरुद्ध है। जब शिक्षा केवल लाभ की वस्तु बन जाती है, तो उसमें करुणा, सेवा भावना, सामाजिक दायित्व और राष्ट्र निर्माण जैसे तत्व स्वतः समाप्त हो जाते हैं। शिक्षा के इस व्यावसायीकरण को नियंत्रित करना एक दार्शनिक जिम्मेदारी है जो समाज, सरकार और शिक्षकों की सामूहिक चेतना से ही संभव हो सकेगा।

3. शिक्षा में असमानता और समावेशिता की कमी

आज भी भारत जैसे देश में शिक्षा तक सभी की समान पहुँच नहीं है। सामाजिक, आर्थिक, लैंगिक और भौगोलिक असमानता शिक्षा प्रणाली में गहराई से विद्यमान है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच, सरकारी और निजी संस्थानों के बीच, और वंचित वर्गों एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के बीच जो अंतर है, वह शिक्षा की समावेशी दृष्टि पर प्रश्नचिह्न लगाता है। शिक्षा का दार्शनिक दृष्टिकोण यह कहता है कि हर व्यक्ति को बिना भेदभाव के समान और गरिमामय शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए। शिक्षा में समावेशिता को सुनिश्चित करना आज की एक महत्त्वपूर्ण दार्शनिक चुनौती है।

4. तकनीकी शिक्षा बनाम मानवीय शिक्षा

डिजिटल युग में शिक्षा का अधिकांश भाग तकनीक आधारित हो गया है। ई-लर्निंग, ऑनलाइन कक्षाएँ, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, और रोबोटिक्स जैसे विषय शिक्षा का अंग बन गए हैं। तकनीकी कौशल जरूरी हैं, लेकिन शिक्षा का उद्देश्य केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित नहीं होना चाहिए। मानवीय संवेदनाएँ, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नैतिक विवेक, और सामाजिक सहयोग जैसे तत्व भी उतने ही आवश्यक हैं। शिक्षा का यह एक दार्शनिक संकट है कि वह मानवीय पहलुओं की अनदेखी कर केवल मशीनी दक्षताओं को बढ़ावा दे रही है।

5. शिक्षा में स्वतंत्रता और रचनात्मकता का अभाव

वर्तमान शिक्षा प्रणाली अभी भी 'एक ही प्रकार का उत्तर' या 'रटंत अधिगम' पर आधारित है। छात्र अपनी जिज्ञासा, रचनात्मकता और विश्लेषणात्मक क्षमता को व्यक्त नहीं कर पाते। इस शिक्षा पद्धति में 'क्या सोचें' पर बल दिया जाता है, न कि 'कैसे सोचें'। यह स्थिति शिक्षा की दार्शनिक आत्मा के खिलाफ है, क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचय नहीं, बल्कि चिंतनशीलता, नवाचार, और सृजनशीलता को विकसित करना होता है।

6. शिक्षक की भूमिका में गिरावट

एक समय था जब शिक्षक को समाज में 'गुरु' का दर्जा प्राप्त था। परंतु आज शिक्षक की भूमिका एक सेवा प्रदाता या कर्मचारी तक सीमित हो गई है। शिक्षण अब एक मिशन नहीं बल्कि केवल एक पेशा बन गया है। यह शिक्षा के दार्शनिक दृष्टिकोण की अवहेलना है, क्योंकि शिक्षक न केवल ज्ञान का वाहक होता है, बल्कि वह छात्रों के चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और सामाजिक चेतना के संवाहक भी होता है। शिक्षक की भूमिका को पुनः आदर्श रूप में स्थापित करना दार्शनिक पुनरावलोकन की मांग करता है।

7. आत्मबोध और जीवन के उद्देश्य का अभाव

आधुनिक शिक्षा में छात्र जीवन के गहरे सवालों — "मैं कौन हूँ?", "मुझे किस दिशा में जाना है?", "मेरा उद्देश्य क्या है?" — के उत्तर खोजने में असमर्थ हो रहे हैं। शिक्षा उन्हें आत्मबोध, आत्मनियंत्रण और जीवन की दिशा निर्धारित करने में सहयोग नहीं कर पा रही। यह दार्शनिक दृष्टिकोण से शिक्षा की गंभीर विफलता है, जो व्यक्ति को केवल एक 'कार्यशील मशीन' बना रही है, न कि एक 'जागरूक मानव'।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

8. वैश्विक बनाम स्थानीय दृष्टिकोण का संघर्ष

आज की शिक्षा प्रणाली ग्लोबल ट्रेंड्स, अंतरराष्ट्रीय मानकों और बहुराष्ट्रीय आवश्यकताओं पर आधारित हो गई है, जिससे स्थानीय भाषा, संस्कृति, और मूल्यों का ह्रास हो रहा है। मातृभाषा, लोक ज्ञान, पारंपरिक शिक्षा पद्धतियाँ, और स्थानीय जीवन शैलियाँ उपेक्षित हो रही हैं। यह शिक्षा को अपनी जड़ों से काटता है, जो कि दार्शनिक रूप से आत्म-विकास के लिए घातक है।

समावेशी शिक्षा और मानवतावादी दर्शन

शिक्षा एक सार्वभौमिक अधिकार है और हर व्यक्ति को समान अवसरों के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का हक है। यह विचार "समावेशी शिक्षा" (Inclusive Education) के मूल में स्थित है। समावेशी शिक्षा वह शैक्षिक दृष्टिकोण है जो यह सुनिश्चित करता है कि सभी विद्यार्थी – चाहे वे किसी भी जाति, लिंग, भाषा, धर्म, सामाजिक-आर्थिक स्थिति या शारीरिक/मानसिक अक्षमता से संबंधित हों – समान रूप से शिक्षण प्रक्रिया में भाग ले सकें और उन्हें किसी भी प्रकार के भेदभाव या बहिष्कार का सामना न करना पड़े। समावेशी शिक्षा की यह संकल्पना मानवतावादी दर्शन से गहराई से जुड़ी हुई है, जो शिक्षा को मानव गरिमा, स्वतंत्रता, समानता, सहयोग और करुणा के सिद्धांतों पर आधारित मानता है। यह निबंध समावेशी शिक्षा और मानवतावादी दर्शन के परस्पर संबंध, महत्व, चुनौतियाँ तथा समाधान पर विस्तृत प्रकाश डालता है।

समावेशी शिक्षा की संकल्पना: समावेशी शिक्षा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी छात्र शिक्षा के अधिकार से वंचित न हो। यह शिक्षा की वह व्यवस्था है जिसमें सामान्य कक्षा में ही विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को उचित संसाधन, सहायता और संवेदनशील वातावरण के साथ पढ़ाया जाता है। यह दृष्टिकोण केवल विशेष बच्चों के लिए नहीं, बल्कि उन सभी के लिए है जिन्हें शैक्षिक, सामाजिक या सांस्कृतिक कारणों से शिक्षा में भाग लेने में कठिनाई होती है। समावेशी शिक्षा यह मानती है कि विविधता ही शिक्षा की शक्ति है, न कि उसकी कमजोरी।

मानवतावादी दर्शन की संकल्पना: मानवतावाद (Humanism) एक दार्शनिक दृष्टिकोण है जो मनुष्य की गरिमा, स्वतंत्रता, संभावनाओं और आत्मविकास पर बल देता है। मानवतावादी शिक्षाविदों – जैसे कार्ल रोजर्स, अब्राहम मास्लो, जॉन डेवी – का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में सीखने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, जिसे उपयुक्त वातावरण और समर्थन द्वारा विकसित किया जा सकता है। शिक्षा केवल बौद्धिक विकास नहीं है, बल्कि यह भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास की प्रक्रिया भी है। मानवतावाद शिक्षा को "व्यक्ति के संपूर्ण विकास" की प्रक्रिया मानता है जिसमें आत्मसम्मान, आत्मबोध, आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे तत्व प्रमुख होते हैं।

समावेशी शिक्षा में मानवतावादी दर्शन की भूमिका: मानवतावादी दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा के मूल सिद्धांतों को आधार प्रदान करता है। दोनों ही यह मानते हैं कि हर छात्र विशेष है, और प्रत्येक को सीखने का अवसर मिलना चाहिए। मानवतावाद के अनुसार, शिक्षा व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों की आंतरिक क्षमताओं को पहचानते हुए उन्हें आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाए। समावेशी शिक्षा इस विचार को व्यवहार में लागू करती है, जहाँ हर छात्र को उसकी आवश्यकता, गति और रुचि के अनुसार सीखने का अवसर मिलता है। इसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए सहायक उपकरण, अतिरिक्त समय, सरल भाषा, विशेष प्रशिक्षित शिक्षक और भावनात्मक समर्थन शामिल होता है। मानवतावाद समावेशी शिक्षा में इस विचार को भी मजबूती देता है कि शिक्षक का कार्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि एक गाइड, मार्गदर्शक और सहानुभूतिपूर्ण व्यक्ति होना चाहिए जो छात्र को आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने में मदद करे। कार्ल रोजर्स के अनुसार, शिक्षक को छात्रों की भावनाओं, जरूरतों और समस्याओं को समझना चाहिए और उन्हें बिना किसी भेदभाव या आलोचना के स्वीकृति देनी चाहिए।

समावेशी शिक्षा के तत्व – मानवतावादी दृष्टि से

1. **सम्मान और स्वीकार्यता:** हर छात्र की गरिमा और विविधता को सम्मान देना और उसे कक्षा में स्वीकार करना।
2. **सकारात्मक संबंध:** शिक्षक और छात्रों के बीच सहानुभूति, विश्वास और सहयोग पर आधारित संबंध बनाना।
3. **व्यक्तिकृत शिक्षा:** सभी छात्रों की क्षमताओं और सीखने की शैली के अनुसार शिक्षण सामग्री और विधियों का प्रयोग।
4. **सहयोगात्मक अधिगम:** समूह कार्य, जो सभी को भागीदारी का अवसर दे और सामाजिक कौशल को बढ़ावा दे।
5. **स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता:** छात्रों को अपनी राय, प्रश्न और विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अवसर देना।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

भारत में समावेशी शिक्षा की स्थिति: भारत में समावेशी शिक्षा को संवैधानिक और नीतिगत स्तर पर समर्थन प्राप्त है। संविधान का अनुच्छेद 21-A शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने समावेशी शिक्षा को प्राथमिकता दी है और विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए शिक्षा को 'सुलभ, समावेशी और न्यायसंगत' बनाने पर बल दिया है। समावेशी शिक्षा के लिए सर्व शिक्षा अभियान, आरटीई अधिनियम, और दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 जैसे कदम इस दिशा में उठाए गए हैं।

समावेशी शिक्षा की चुनौतियाँ

हालांकि समावेशी शिक्षा के सिद्धांत आदर्श हैं, परंतु व्यवहार में अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं:

1. **संसाधनों की कमी:** विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्कूलों में सहायक उपकरण, सुविधाएँ और प्रशिक्षित शिक्षक नहीं होते।
2. **शिक्षकों का अभाव:** अधिकांश शिक्षकों को समावेशी शिक्षा का प्रशिक्षण नहीं मिला होता, जिससे वे विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को उचित सहायता नहीं दे पाते।
3. **भेदभाव और सामाजिक दृष्टिकोण:** कई बार शिक्षक, छात्र और अभिभावक विशेष बच्चों को 'अलग' या 'कमज़ोर' समझते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास टूटता है।
4. **भाषाई, सांस्कृतिक विविधता:** विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों के लिए समान और उपयुक्त शिक्षा व्यवस्था तैयार करना कठिन होता है।
5. **नीति और क्रियान्वयन में अंतर:** सरकार द्वारा नीति तो बनती है, परंतु उसका वास्तविक क्रियान्वयन कमज़ोर रहता है।

समाधान और सुझाव

इन चुनौतियों से निपटने के लिए कुछ मानवतावादी और व्यवहारिक उपाय अपनाए जा सकते हैं:

1. **शिक्षक प्रशिक्षण:** सभी शिक्षकों को समावेशी शिक्षा और मानवतावादी दृष्टिकोण पर आधारित प्रशिक्षण देना चाहिए।
2. **विद्यालय का परिवेश:** स्कूल का वातावरण सहयोगी, स्वागतपूर्ण और संवेदनशील होना चाहिए, जहाँ हर छात्र को समान अवसर मिले।
3. **मूल्य शिक्षा का समावेश:** पाठ्यक्रम में करुणा, सहिष्णुता, सहानुभूति और मानवाधिकार जैसे विषयों को समाहित किया जाए।
4. **अभिभावक और समुदाय की भागीदारी:** समाज में जागरूकता फैलाकर समावेशी शिक्षा की आवश्यकता को जन-आंदोलन बनाना चाहिए।
5. **तकनीक का प्रयोग:** डिजिटल टूल्स, सॉफ्टवेयर और एप्स की मदद से विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को सुगम बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

शैक्षिक दर्शन केवल अतीत के विचारों का संग्रह नहीं, बल्कि भविष्य की शिक्षा को दिशा देने वाली प्रेरणास्रोत शक्ति है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को यदि अधिक मानवीय, समावेशी, व्यवहारिक, नैतिक और आत्मोन्मुख बनाना है, तो उसे शैक्षिक दर्शन से निरंतर संवाद बनाए रखना होगा। शिक्षा में केवल तकनीकी उन्नति, पाठ्यक्रम सुधार या अधिगम तकनीकों में बदलाव पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि आवश्यक है कि हम यह पुनर्विचार करें कि "हम शिक्षा क्यों दे रहे हैं?", "हम किस प्रकार के नागरिकों का निर्माण करना चाहते हैं?" और "क्या हमारी शिक्षा मनुष्य को बेहतर बना रही है?" जब तक ये प्रश्न हमारे शिक्षानीति और व्यवहार का आधार नहीं बनेंगे, तब तक शिक्षा अधूरी और दिशाहीन रहेगी। इसीलिए, शैक्षिक दर्शन और वर्तमान शिक्षा प्रणाली के मध्य एक जीवंत संवाद और संतुलन आवश्यक है, जो शिक्षा को केवल ज्ञान की प्रक्रिया से उठाकर, एक पूर्ण मानव निर्माण की प्रक्रिया बना सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, आर. ए. (2018). *शैक्षिक दर्शन.* मेरठ: र. लाल बुक डिपो।
2. अग्रवाल, जे. सी. (2020). *भारतीय शिक्षा और उसका विकास.* नई दिल्ली: आर्या बुक डिपो।
3. सिंह, योगेन्द्र. (2019). *शिक्षा के सिद्धांत और दर्शन.* लखनऊ: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
4. वर्मा, एम. पी. (2021). *शैक्षिक चिंतन एवं दर्शन.* नई दिल्ली: शारदा पुस्तक भवन।
5. मिश्रा, बी. एन. (2017). *शिक्षा और समाज: एक दार्शनिक परिप्रेक्ष्य.* वाराणसी: ज्ञान भारती प्रकाशन।
6. गोयल, ए. (2018). *आधुनिक शिक्षा दर्शन.* आगरा: विनय प्रकाशन।
7. त्रिपाठी, एस. के. (2016). *शिक्षा का समाजशास्त्र और दर्शन.* प्रयागराज: एस.बी.एन. प्रकाशन।
8. कुमार, राजीव. (2022). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षा दर्शन.* पटना: बिहार बुक एजेंसी।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-5(A)| May-2026

9. शुक्ला, आर. एन. (2019). *शिक्षा शास्त्र और मानवतावादी दृष्टिकोण*. गोरखपुर: प्रकाश पुस्तकालय।
10. नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (NCERT). (2020). *शिक्षा का भारतीय परिप्रेक्ष्य*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी प्रकाशन।
11. भारतीय शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय।
12. चौधरी, के. एल. (2018). *शैक्षिक परिवर्तन और दर्शन*. जयपुर: राजस्थानी ग्रंथ अकादमी।